storyweaver Community

पठन स्तर ३

लड़कियाँ भी डाक्टर बन सकती हैं

Author: Aditi Das
Illustrators: Anastasiya Ivanova, Ashok Rajagopalan, Pradip Kumar Sahoo, Priya Kuriyan, dakshayani velagapudi
Translator: permila rani

बहुत समय पहले की बात है जब कादंबिनी की दादी माँ बीमार पड़ गयी थी, पूरा परिवार उनकी बीमारी के कारण परेशान था.

"बाबा,डाक्टर को ज़ल्दी से बुला लॉ," कादंबिनी अपने बाबा से विनती करने लगी.

" तुम्हारी दादी माँ किसी आदमी डाक्टर से अपना इलाज़ नहीं करवाना चाहती हैं," बाबा ने उदास हो कर ज़वाब दिया.

" क्या हमारे यहाँ महिला डाक्टर नहीं हां?" कादंबिनी ने पूछा.

" बड़ी होने पर मैं डाक्टर बनूँगी," कादंबिनी सोच रही थी. कादंबिनी ने डाक्टर बनने का फ़ैसला कर लिया था ताकि वह उन औरतों और बच्चो का इलाज़ कर सके जो किसी मर्द डाक्टर से इलाज़ नहीं करवाना चाहते हैं.
कादंबिनी ने बहुत किताबें पड़ी. पहले स्कूल में पढ़ाई की और फिर कालेज में पढ़ाई की.

लोगों ने कहा-" लड़कियाँ डाक्टर नहीं बन सकती. किसी ने कभी यह सोचा ही नहीं था कि लड़कियाँ भी डाक्टर बन सकती हैं. कलकत्ते में कभी किसी लड़की ने डाक्टर बनने की बात सोची ही नही थी.
लेकिन कादंबिनी अपने फ़ैसले पर अटल थी. वह पूरी लगन और मेहनत के साथ पढ़ाई करती रही. वह कलकता मेडिकल कालेज में दाखिला लेने वाली पहली लड़की थी.

कलकता मेडिकल कालेज में कादंबिनी अपनी क्लास में अकेली लड़की थी. वह कलकता में लोगों का इलाज करने वाली पहली महिला डाक्टर थी.
कादंबिनी अधिक कुशल डाक्टर बनने के लिए आगे भी पढ़ना चाहती थी. इसलिए वे आगे की पढ़ाई करने के लिए इंग्लैंड गयी.

अपनी इच्च्छा के अनुरूप पढ़ाई पूरी करने के बाद कादंबिनी अपने देश वापिस आ गयी. वह महिलाओँ और बच्चों की डाक्टर बन गयी थी.

" लड़कियाँ भी डाक्टर बन सकती हां,"उसने कहा.

कादंबिनी गांगुली (बोस) का जन्म 18,जुलाई ,1861 को ब्रिटिश इंडिया में भागलपुर में हुआ था. कादंबिनी ने इंडिया के पहले महिला कालेज , कलकता के ' बेथयून कालेज' में पढ़ाई की थी. शुरू-शुरू में क्लास में केवल दो लड़कियाँ -कादंबिनी और उसकी सहेली चंद्रमुखी बासु ही पढ़ती थी. 1883में पढ़ाई पूरी करने के बाद वे पूरे भारत में ग्रेजुएशन करने वाली पहली लड़कियाँ तीन.

उसके बाद डाक्टर बनने के लिए कड़ी मेहनत से पढ़ाई की. वह कलकता मेडिकल कालेज में पढ़ाई करने वाली भारत की पहली लड़की थी. 1886 में उसने 1886 में बंगाल मेडिकल कालेज से ग्रेजुएट की डिग्री प्राप्त की थी. उन्होने आनन्दी बाई जोशी के साथ भारत की महिला डाक्टरों का पथ प्रदर्शन किया था.

अपने कार्यक्षेत्र में ज़्यादा अनुभव प्राप्त करने के लिए वह 1892 में यू.के गयी और वहाँ एडिनबर्ग,ग्लासगो और डबलिन ने उनको अनेक सर्टिफिकेट दिए. इंडिया वापिस आने के बाद वह महिलाओं और बच्चों की डाक्टर बन गयी.

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: लड़कियाँ भी डाक्टर बन सकती हैं is translated by permila rani . The © for this translation lies with permila rani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Girls can also be doctors - Kadambini', by Aditi Das . © Aditi Das , 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Doctor showing her shed to the mason, by Ashok Rajagopalan © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: girl hugs father, by Anastasiya Ivanova © Anastasiya Ivanova, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Girl picking a book from a bookshelf, by dakshayani velagapudi © dakshayani velagapudi, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Woman, a baby in a basket, buildings, by Priya Kuriyan © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Woman, a baby in a basket, buildings, by Priya Kuriyan © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Doctor showing her shed to the mason, by Ashok Rajagopalan © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: A yellowish background, by Pradip Kumar Sahoo © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A yellowish background, by Pradip Kumar Sahoo © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लड़कियाँ भी डाक्टर बन सकती हैं

(Hindi)

यह इंडिया की पहली महिला ग्रेजुएट कादंबिनी गांगुली की कहानी है. वह पूरे दक्षिण एशिया में पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति की पहली महिला चिकित्सक थी.

This is a Level 3 book for children who are ready to read on their own.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!